

**अद्धा** पुं. (तत्.) 1. किसी वस्तु का आधा भाग 2. शराब की पूरी बोतल का आधा 2. ईंट का आधा टुकड़ा 4. प्रत्येक घंटे के मध्य में बजने वाला घंटा 5. चार मात्राओं का ताल 6. एक पैसे का सोलहवाँ भाग 7. बढ़िया किस्म की मलमल आदि।

**अद्य** क्रि.वि. (तत्.) 1. आज 2. अब, अभी पुं. (तत्.) आज का दिन, वर्तमान का समय।

**अद्यतन** वि. (तत्.) 1. आज तक का, आज के दिन तक 2. वर्तमान 3. नवीनतम पुं. 1. बीती हुई आधी रात से लेकर आनेवाली आधी रात तक का समय 2. बीती हुई रात के शेष प्रहर तक का समय।

**अद्यपूर्व** अव्य. (तत्.) इस समय से पहले, आज से पहले, अब से पहले, इससे पूर्व।

**अद्यप्रभृति** क्रि.वि. (तत्.) आज से लेकर, इस दिन से लेकर।

**अद्यावत** क्रि.वि. (तत्.) 1. आज तक, अभी तक 2. अधुनातन।

**अद्यावधि** क्रि.वि. (तत्.) आज (की अवधि) तक, अब तक, इस समय पर्यंत।

**अद्यैव** क्रि.वि. (तत्.) आज ही, इसी समय, अभी।

**अद्रना** वि. (अर.) 1. बहुत ही छोटा या साधारण, अधम, तुच्छ, मामूली, क्षुद्र, सामान्य 2. दृढ़ता या निश्चय पूर्वक कोई बात करना।

**अद्रव्य** पुं. (तत्.) 1. सत्ताहीन पदार्थ 2. अवस्तु, असत् 3. शून्य 4. तुच्छ वस्तु, नाचीज वि. द्रव्य-रहित या धनरहित दरिद्र।

**अद्रि** पुं. (तत्.) 1. पहाड़, पर्वत 2. पत्थर 3. बिजली 4. वृक्ष 5. सूर्य 6. बादल, बादलों का समूह 7. काव्य में सात की संख्या का सूचक शब्द।

**अद्रिकन्या** स्त्री (तत्.) पार्वती।

**अद्रिकुक्षि** स्त्री (तत्.) (पर्वत की कोख अर्थात्) गुफा, कंदरा।

**अद्रिज** वि. (तत्.) पर्वत से उत्पन्न पुं. 1. शिलाजीत, शिलाजित 2. गेरू (मिट्टी)।

**अद्रिजा** स्त्री. (तत्.) 1. पार्वती 2. गंगा नदी 3. सिंहली पीपल।

**अद्रितनया** स्त्री. (तत्.) 1. पार्वती 2. गंगा।

**अद्रिद्रोणी** स्त्री. (तत्.) 1. पर्वतों के बीच स्थित दोने के आकार की गहरी जगह 2. नदी का उद्गम।

**अद्रिपति** पुं. (तत्.) पर्वतराज हिमालय।

**अद्रिभृंग** पुं. (तत्.) पर्वत या पहाड़ की चोटी।

**अद्रिसार** वि. (तत्.) पर्वत जैसा दृढ़ पुं. लोहा, शिलाजीत।

**अद्रिसुता** स्त्री. (तत्.) 1. पर्वत की पुत्री, हिमालय की पुत्री पार्वती, पर्वत में या पर्वत से उत्पन्न 2. गंगा आदि।

**अद्रीश** पुं. (तत्.) पर्वतीश, पर्वतराज हिमालय।

**अद्रोह** पुं. (तत्.) 1. द्रोह या द्वेष का अभाव 2. विनम्रता।

**अद्रोही** वि. (तत्.) 1. किसी से द्रोह या द्वेष न करने वाला 2. विनम्र विलो. द्रोही।

**अद्लखाना** पुं. (अर.) न्यायालय, कचहरी।

**अदली** वि. (अर.) न्यायशील।

**अद्व** वि. (तत्.) 1. जो सरल न हो 2. ठोस 3. कठिन।

**अद्वंद्व** वि. (तत्.) एकमात्रता, अभिन्नता, जिसमें द्वंद्व न हो, द्वंद्व रहित।

**अद्वंद्वमूलक** वि. (तत्.) जिसका मूल 'द्वंद्व' नहीं हैं, 'द्वंद्व' के अभाव वाला, अभिन्न मूल वाला, द्वंद्वहीनतापरआधारित या उससे उत्पन्न।

**अद्वय** वि. (तत्.) 1. दो नहीं, एक भाव, अपने प्रकार का 2. अकेला, जिसका कोई विकल्प न हो, बेजोड़, अनुपम, अद्वितीय।

**अद्वितीय** वि. (तत्.) 1. जिसके समान दूसरा न हो, जिससे टक्कर लेने वाला कोई और न हो, बेजोड़, अनुपम, विलक्षण, अद्भुत, विचित्र 2. प्रधान, मुख्य पुं. (तत्.) आत्मा, ब्रह्म।